उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्,

केन्द्र संख्या की मुहर	केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर
केन्द्र सं० इण्टर 0823	

नोट—केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा—

अनुक्रमांक (अंकों में)— 22467987

अनुक्रमांक (शब्दों में)— दो करोड़ चौबीस लाख सड़सठ हजार नौ सौ सत्तासी

विषय— हिन्दी

प्रश्नपत्र संकेतांक— 401 (IOA)

परीक्षा का दिन— सोमवार

परीक्षा तिथि— 28.03.22

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय—

केन्द्र संख्या— 0823

परीक्षा कक्ष संख्या— 05

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम— Balwant Singh

दिनांक— 28/03/22

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक—

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न-पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक—

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक—

त्रुटि का प्रकार—

दिनांक—

हस्ताक्षर निरीक्षक—

खण्ड-'अ'

प्रश्न 1: उत्तर

जब लोग ---------- से अलग।

उत्तर क

लोगों को हमारी सहानुभूति या प्रोत्साहन की आवश्यकता तब होती है, जब वे त्रस्त हों, पराजित हों या शोकाग्रस्त हों।

उत्तर ख

सच्ची भावना का असर यह पड़ता है कि, वह हृदय को बाँध सकती है।

उत्तर ग

ऊपर से आत्मविश्वासी व संतुष्ट दिखाई देने वाले व्यक्ति को भीतर से, हमारी प्रशंसा, प्रोत्साहन व स्नेह की जरूरत होती है।

उत्तर घ

दूसरों की भावनाओं को ठीक-ठीक समझना, उनकी कद्र करना, उनके साथ-सच्चाई और

NC

स्नेह का व्यवहार करना, व्यवहार कुशलता के लक्षण हैं।

उत्तर ड.

शीर्षक :- व्यवहार कुशलता।

प्रश्न: 3 उत्तर

उत्तर: क

एक अच्छे समाचार के गुण हैं, उसकी सत्यता, विश्वसनीयता व शुद्धता।

उत्तर: ख

किसी विषय पर सृजनात्मक, सुव्यवस्थित व मनोरंजक लेख फीचर कहलाता है

उत्तर ग

(iii) पत्रिका

उत्तर - घ

(iii) ऑडियो , वीडियो माध्यम ,

उत्तर ङ

(ii) संपादकीय ,

प्रश्न 4: उत्तर

' समाचार पत्र: लोकतंत्र का प्रहरी '

खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो,
जब तोप मुकाबिल हो तो; अखबार निकालो॥

जी हाँ, अकबर इलाहबादी ने ये पंक्तियाँ यूँ ही नहीं कही थी बल्कि उन्होंने अखबार की ताकत को खुद अपनी आँखों से देखी थी, वह अखबार की ही ताकत थी, जिसने अंग्रेजी शासन की नींव हिला दी। बाल गंगाधर तिलक के केसरी व मराठा जैसे समाचार पत्रों ने स्वतंत्रता के आंदो-लन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे बौखलाकर अंग्रेजों ने उन्हें जेल

में डाल दिया और अंत में लाठी के प्रहारों से उन्हें मौत की नींद सुला दिया, परंतु अंत में उन्हें अपना बोरिया बिस्तर समेटकर वापस जाना पड़ा,

अंग्रेज चले गए, परंतु अपनी अंग्रेजियत भारतीयों को विरासत में दे गए, जिसका परिणाम यह है कि आज राजनेता राजतंत्र के आधार पर गुंडातंत्र और भ्रष्टतंत्र चला रहे हैं, देश का सारा धन समेटकर विदेशों में जमा कर रहे हैं और देश की भोली-भाली जनता सब कुछ देखते हुए भी कुछ करने में असमर्थ है, ऐसी स्थिती में समाचार पत्रों की बड़ी भूमिका होती है। जब-जब समाचार पत्रों ने पूरी निष्ठा के साथ, अपना कार्य किया है, तब-तब राजतंत्र के ठेकेदारों को मुँह की खानी पड़ी है।

इसका खुलासा सर्वप्रथम तब हुआ था जब प्रसिद्ध पत्रकार अरूण शौरी ने एक काण्ड का खुलासा किया, परिणामस्वरूप तत्कालीन राजीव गाँधी सरकार को अपनी सत्ता से हाथ धोना पड़ा। इसीलिए, इस युग में हम यह कह सकते हैं कि समाचार पत्र अपनी बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। यह एक मजबूत स्तम्भ की तरह हैं। इनकी पैनी निगाह सरकार के हर कार्य

पर होती है इसीलिए कोई गलत कदम उठाने से पूर्व सौ बार सोचते हैं, इसीलिए आज के युग में समाचार पत्र उचित रूप में लोक-तंत्र का प्रहरी है।

प्रश्न 5 : उत्तर

बच्चे प्रत्याशा ..... ढलता है।

उत्तर क :-

कवि - हरिवंशराय बच्चन,
कविता - दिन जल्दी - जल्दी ढलता है।

उत्तर ख :-

वह माता का अपने बच्चों के प्रति प्रेम व वात्सल्य भाव है, जो चिड़िया के पंखों में तेजी भर देती है, सुबह होते ही वह दाने की तलाश में दूर निकल पड़ती है, उसके बच्चे जो उड़ नहीं सकते वे घोंसले में रहकर अपने माता-पिता के आने की प्रतीक्षा करते हैं, संध्या होते ही उनका इंतजार चरम सीमा में होता है और वह सोचकर कि मेरे आने की प्रतीक्षा में मेरे बच्चे घोंसले से बाहर झाँक रहे होंगे, सोचकर चिड़िया के पंखों में चंचलता भर जाती है।

उत्तर-ग

कवि चंचलता इसलिए त्याग देना चाहता है क्योंकि जीवन में वह तभी तक होती है, जब तक जिम्मेदारियों का भार होता है, वह कहता है कि मेरी प्रतीक्षा करने वाला कोई भी नहीं है, तो मैं किसके लिए चंचलता दिखाऊ। इसीलिए वह चंचलता त्यागना चाहता है

प्रश्न 6: उत्तर

धूत कहौ ---------- दोऊ।

उत्तर - क

भाव - सौंदर्य

प्रस्तुत काव्यांश में तुलसीदास कहते हैं कि- मुझे कोई धूत कहे, अवधूत कहे, राजपूत कहे तथा जोलाहा कहे, मुझे इससे कोई फरक नहीं पड़ता। मैं तो श्री राम का भक्त हूँ जो वही करता है, जो उसके मन में है, मैं लोगों से भिक्षा माँगकर खाता हूँ, मंदिरों में सोता हूँ किसी से ना एक लेता हूँ न किसी को दो देता हूँ। मुझे किसी की बेटी के

साथ अपने पुत्र का विवाह कर उसी की जाति व कुल बिगाड़ने का शौक नहीं है। मैं सिर्फ ईश्वर में आस्था रखता हूँ और उसी का गुलाम हूँ।

उत्तर - ख

भाषा सौंदर्य

1- 'बेटीसों बेटा न ब्याहब' में ब वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

2- करुण रस का काव्यांश में बोध होता है।

3- तुलसी ने अपनी भक्ति भावना का बोध कराया है।

4- 'लैबको एकु न दैबको दोऊ' में मुहावरा युक्त भाषा है।

प्रश्न 7 उत्तर -

उत्तर 'क'

'कविता के बहाने' नामक पाठ के आधार पर 'सब घर एक कर देने के माने' का आशय

यह है कि – कविता अपने रसास्वादन से विश्व के प्रत्येक घर को बिना किसी भेदभाव के आनंदित करती है। कविता चिड़ियों के समान नहीं है, जो अंतरिक्ष में कुछ सीमा तक और एक-घर से दूसरे घर तक सीमित है, बल्कि कविता अपने कल्पनारूपी पंखों के द्वारा विश्व के प्रत्येक घर तक समान रूप से पहुँचती है, और प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के समान रूप से आनंदित करती है।

उत्तर: ख

"कैमरे में बंद अपाहिज" पाठ दूरदर्शन चैनल के उन व्यक्तियों पर व्यंग्य है जो एक अपाहिज व्यक्ति का साक्षात्कार लेने हुए उसे कैमरे के सामने बिठाकर बेतुके प्रश्न करके उसे आहत करते हैं और उसे रुलाकर दर्शकों की सहानुभूति पाकर अपना दर्शक सूचकांक संख्या (टी आर-पी.) बढ़ाना चाहते हैं परंतु जब वे ऐसा करने में असमर्थ रहते हैं तो कहते हैं– 'परदे पर वक्त की कीमत है'– अर्थात इससे उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ, उनका समय अमूल्य है, वे इसे बर्बाद नहीं करना चाहेंगे और अंत में कैमरा बंद

प्रश्न - 8 उत्तर

इन बातों ..... यह स्थिति ?

उत्तर क

लेखक कहता है, समय - समय पर भ्रष्टाचार को समाप्त करने की बात लोगों द्वारा कही जाती है, वे इसके लिए सख्त कदम उठाने की मांग भी करते हैं, परंतु दुःख तो इस बात का है कि आज इन बातों को पचास से ज्यादा बरस हो आए हैं परंतु अभी तक वे बातें ज्यों की त्यों दर्ज हैं, लेखक के मन को यह बात कचोट जाती है।

उत्तर - ख

भ्रष्टाचार की बातें करते समय हम यह भूल जाते हैं कि - हम इसे समाप्त करने हेतु कदम उठाए जाने की मांग तो कर रहे हैं परन्तु यह नहीं देखते कि स्वयं हम भी भ्रष्टाचार में संलग्न हैं तथा उसी का एक अंग बन रहे हैं।

उत्तर- ग

'गगरी फूटी को फूटी, बैल पियासे के पियासे'
वाक्य का आशय यह है कि —

सरकार द्वारा तो लोगों के लिए पर्याप्त मात्रा में मदद आ रही है परंतु देश के भ्रष्ट व लोभी राजनेताओं, लोगों के द्वारा उस मदद को निर्धन लोगों तक पहुँचने नहीं दिया जा रहा है। इसीलिए गगरी फूटी की फूटी (मदद तो भर-भर कर आ रही है परंतु) बैल पियासे के पियासे (निर्धन लोग उससे वंचित हैं)।

प्रश्न 9: उत्तर

उत्तर क

भक्तिन का वास्तिक नाम लक्ष्मी था। जब भक्तिन को अपने नाम की यथार्थता का पता चला कि लक्ष्मी जगतपालक भगवान विष्णु की पत्नी है तथा संपन्नता और धन की देवी है, उसे अपने नाम और वास्तविकता में बहुत विरोधाभास लगा उसने सोचा यदि वह किसी को अपना वास्तविक नाम बताएगी तो लोग उसके नाम और उसकी वास्तविक स्थिति (निर्धनता) का परिहास ही करेंगे, इसीलिए वह अपना वास्तविक नाम छिपाती थी, बाद में जब वह काम के लिए महादेवी वर्मा के पास गई

तो उन्होंने उसकी कण्ठी माला देख उसे भक्तिन नाम दे दिया।

उत्तर - ख

'बाजारूपन' से तात्पर्य है जहाँ सद्भाव न हो, भाईचारा न हो, लोगों में केवल क्रेता और विक्रेता का संबंध हो। जहाँ लोगों के मन में एक दूसरे के प्रति छल व कपट हो।

बाजार की सार्थकता इसमें है कि वहाँ भगत जी जैसे लोग जाएँ, जो खाली मन से बाजार नहीं जाते बल्कि सोच-समझकर जाते हैं, उन्हें पता होता है, वे क्या चाहते हैं और अपनी आवश्यकता की वस्तु लेकर सीधे घर लौटते हैं, बाजार में अनावश्यक भीड़भाड़ नहीं बढ़ाते, अर्थात उनका अपने मन पर पूर्ण नियंत्रण होता है बाजार की आकर्षक वस्तुओं का जादू उन पर नहीं चलता।

प्रश्न 10: उत्तर

उत्तर - ख

'जूझ' कहानी के आधार पर लेखक पर सबसे

अधिक प्रभाव उसके मराठी के अध्यापक न. वा. सौंदलगेकर जी का पड़ा। सौंदलगेकर जी मराठी भाषा के अध्यापक थे तथा वे कक्षा में कविताएँ बड़े ही मनोरंजन हाव-भाव के साथ गाकर सुनाते थे। उनकी वाणी में स्पष्टता शब्द को बढ़िया लय, ताल, रस की अभिव्यक्ति थी, उन्हें अलंकारों, रसों आदि का भली भाँति ज्ञान था, इससे लेखक अत्यधिक प्रभावित हुआ। इन सबके अतिरिक्त, सौंदलगेकर जी की मालती बेल पर रचित कविता से लेखक को स्वयं कविता रचना करने की प्रेरणा मिली।

उत्तर (ग)

सिंधु-सभ्यता अपने समय की प्रमुख सभ्यताओं में एक थी। पुरातत्त्ववेताओं के मुताबिक यह साधन-संपन्न थी। सिंधु सभ्यता में, लोगों में कला की सुरुचि थी नगर-निर्माण, मृतभाण्ड में चित्रित आकृतियाँ इस सबका प्रतीक है। साधन संपन्न होने के बाद भी यहाँ लोगों की सामाजिक वृद्धि की ओर ध्यान दिया/रखा गया है। एक पुरातत्त्ववेता के मुताबिक सिंधु घाटी का सौंदर्य बोध

वहाँ की नीति है, जो राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाजपोषित थी। यहाँ घर छोटे बड़े हैं, परंतु सभी एक कतार मे हैं, इसलिए यह कहा जा सकता है कि सिंधु सभ्यता साधन संपन्न थी परंतु उसमें भव्यता का आडम्बर नहीं था।

प्रश्न 11: उत्तर

"जूझ" कहानी लेखक आनंद यादव की रचना है जो उनके स्वयं के संघर्षों पर आधारित है। जूझ कहानी में आनंदा (लेखक) उसके द्वारा किए गए संघर्षों का उल्लेख करता है —

विद्यालय जाने के लिए संघर्ष —

लेखक पढ़ने के लिए लालायित था परंतु अपने पिता के डर से मैं पढ़ने जाऊँगा कहने की हिम्मत न थी, परंतु वह इस विषय मे अपनी माँ से कहता है और माँ की विवशता देखकर स्वयं राव सरकार की मदद लेने को कहता है, राव सरकार द्वारा उसके पिता को धमकाए जाने पर उसे विद्यालय जाने की अनुमति मिल जाती है, इस प्रकार वह विद्यालय जाने के लिए संघर्ष करता है,

कक्षा में स्थान बनाने हेतु संघर्ष -
जब लेखक पहले दिन विद्यालय गया, वह अत्यधिक प्रसन्न था परंतु एक बच्चे ने उसकी मटमैली धोती व गमछे को देख उसका उपहास बनाया जिससे वह दुःखी हो गया परंतु अपने कठिन परिश्रम व लगन से जल्द वह कक्षा के होशियार बच्चों में गिना जाने लगा, व शिक्षकों से शाबासी का पात्र बना। इस प्रकार कक्षा में अपना स्थान प्राप्त करने के लिए उसने संघर्ष किया।

कविता रचना करने हेतु संघर्ष -
अपने मराठी अध्यापक से प्रभावित होकर लेखक भी कविता रचना करने लगा था, इसीलिए जब वह खेतों पर काम करने व ढोर चराने जाता तो पत्थर से शिला पर लिखकर व भैंस की पीठ पर लकड़ी से लिखकर कविता रचना किया करता था। इस प्रकार कविता रचना करने के लिए उसे संघर्ष करना पड़ा।

इस प्रकार प्रारंभ से लेकर अंत तक लेखक का संघर्ष व जुझारू प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है, अतः कहानी का शीर्षक 'जूझ' (संघर्ष) उचित ही है।

खण्ड 'ब'

प्रश्न : 12 उत्तर

एक: - - - - - - - - - - आस्ति।

उत्तर (क)

एक: नवयुवक: अधिवक्ता श्वेतवेश: बिना टोपिकां धृत्वा न्यायालयं प्रविष्टवान्।

उत्तर (ख)

आंग्लन्यायाधीश: नवयुवकस्य भारतीयं वेशं दृष्ट्वा आदिष्टवान् - "यत् टोपिकां बिना न्यायालयं प्रविशतु अन्यथा बहिर्गच्छतु।"

उत्तर (ग)

नवयुवक: आंग्लन्यायाधीशस्य समक्षं अवदत् - "अहं न्यायालयं त्यक्तुं शक्नोमि परं स्वटोपिकां न निष्कासयिष्यामि।

प्रश्न 13: उत्तर

रे! रे! - - - - - - - - श्रूयतां।

उत्तर - क

उत्तर ख

अम्बोदा: वसुधां आर्द्रयन्ति

प्रश्न 14: उत्तर

उत्तर क) जिह्वा सदैव कटुवचनं वदति।

उत्तर ख) नीचा: विघ्नभयेन कार्यं न आरभन्ते।

ग) मांसभक्षणात् अग्रज: उदरे महान्तं पीडां अनुभूतवान्।

घ) वल्ली वृक्षं वेष्टयति।

च) केदारघाटी उत्तराखण्ड राज्ये वर्तते।

प्रश्न 15: उत्तर

गच्छति - स: विद्यालयं गच्छति।

कन्दुकेन - राम: कन्दुकेन क्रीडति

पुस्तकम् - अहं पुस्तकं पठामि।

गगने - गगने बहव: अम्बोदा: सन्ति।

प्रश्न 16: उत्तर

श्लोक

हे जिह्वे कटुक स्नेहे मधुरं किं न भाषसे।
मधुरं वद कल्याणि लोकोऽयं मधुरप्रियः॥

हिन्दी में अनुवाद:- हे कटुता से स्नेह करने वाली जीभ! तू मधुर क्यों नहीं बोलती अर्थात् तू सदैव कटु वचन ही क्यों बोलती है, तेरे द्वारा तो मधुर वचन कहे जाने चाहिए, हे कल्याणकारी, मधुर वचन बोल क्योंकि यह संसार मधुरता को प्रेम करने वाला है अर्थात् सभी को मधुर वचन ही प्रिय लगते हैं, कटु वचन बोलने वालों का यह सम्मान नहीं करता।

प्रश्न 2: उत्तर

शिक्षित बेरोजगारी : एक अभिशाप

प्रस्तावना: क्या आपने कभी उस नवयुवक को देखा है जो सम्मानपूर्वक हाथ में डिग्री लिए बाहर आया हो। परन्तु आज भी वह कार्य की तलाश में इधर - उधर भटक

रहा हो, जो देर रात तक जागकर समाचार के विज्ञापन में कार्य की तलाश कर रहा हो, जिससे घर में निकम्मा घोषित कर दिया गया हो जिससे बेचैन होकर पर वह अपनी डिगरी तक जलाने को तत्पर हो, इसे कहते हैं किसी काम से वंचित शिक्षित बेरोजगार।

शिक्षित बेरोजगारी का अर्थ:

शिक्षित बेरोजगारी से तात्पर्य है जब कोई योग्य - कुशल व्यक्ति वर्तमान कार्य दर पर कार्य करना चाहता है परन्तु वह कार्य प्राप्त करने में असमर्थ है, उस व्यक्ति को शिक्षित बेरोजगार कहा जाता है, निरक्षर, विकलांग ऐसे व्यक्ति इसके अंतर्गत नहीं आते।

शिक्षित बेरोजगारी : प्रमुख समस्या

शिक्षित बेरोजगारी एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है, यह केवल व्यक्ति में निराशा ही उत्पन्न नहीं करती बल्कि शारीरिक रोग, मानसिक तनाव को भी बढ़ाती है। यह आज के समय में बड़ी समस्या बन चुकी है अतः सरकार को इसके निवारण हेतु जल्द - से जल्द

आवश्यक कदम उठाने होंगे अन्यथा इसका कुप्रभाव और अधिक बढ़ जाएगा।

शिक्षित बेरोजगारी : के कारण

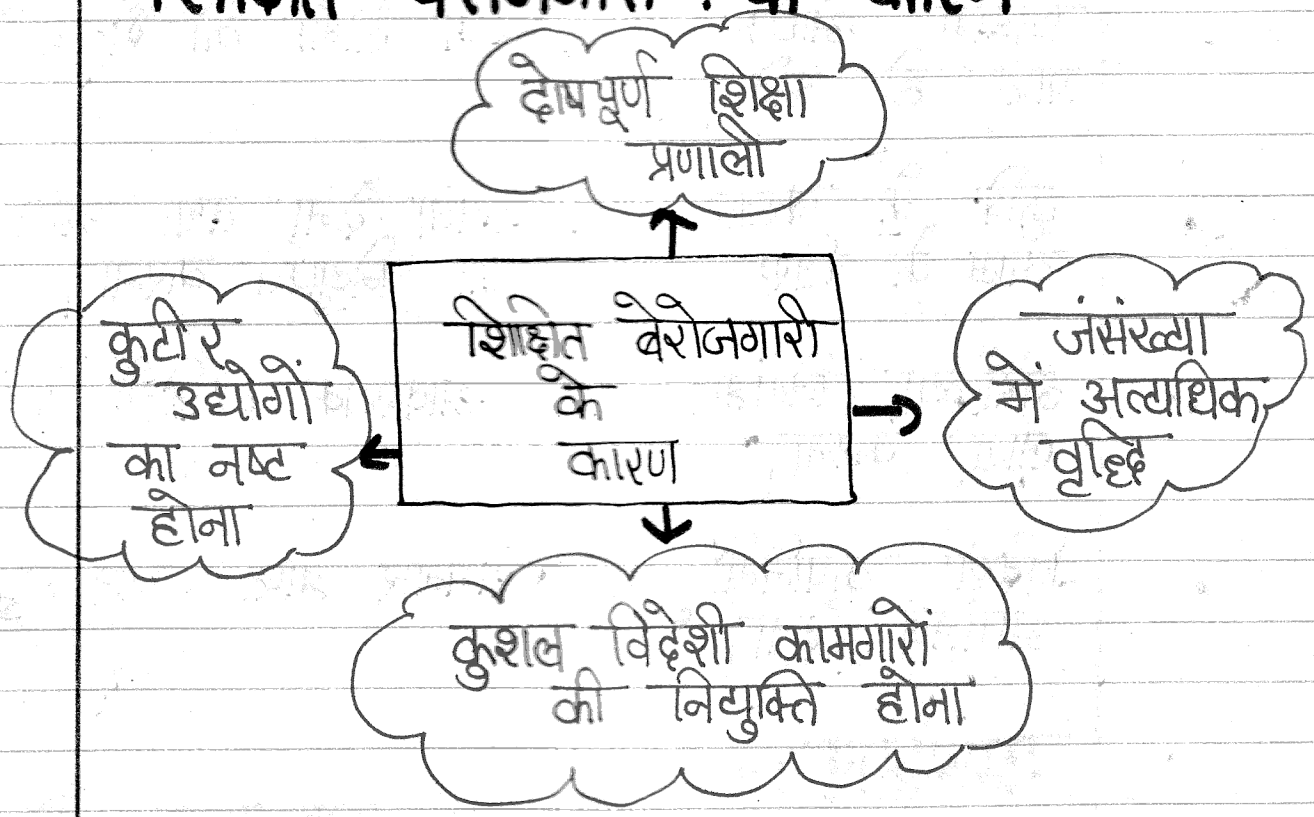

इन सभी के अतिरिक्त भी अनेक ऐसी चीजें हैं जिनसे शिक्षित बेरोजगारी जैसी समस्या उत्पन्न होती हैं।

शिक्षित बेरोजगारी : कम करने हेतु उपाय

इस बेरोजगारी के निवारण हेतु कई उपाय किए जा सकते हैं, उनमें से कुछ निम्नवत हैं :-

- कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देना।
- शिक्षा नीति में सुधार करना।
- सरकार द्वारा नई नीतियों का आयोजन करना जिसमें अधिक से अधिक लोगों को रोजगार प्राप्त हो सके।
- कृषि के विस्तार को बढ़ावा देना तथा उसमें काम के लिए मजदूरों की नियुक्ति करना।
- जनसंख्या नियंत्रण हेतु आवश्यक नीतियों को लागू करना।
- विदेशी कंपनियों को रोजगार प्राप्त करने हेतु आमंत्रण देना।

उपसंहार :- जैसा कि हम सभी जानते हैं, आज शिक्षित बेरोजगारी एक बड़ी समस्या बन चुकी है, तथा इससे आने वाले समय में देश को भयंकर हानि हो सकती है, इसके निवारण हेतु कोई पहल करना अत्यंत आवश्यक बन चुका है। सरकार इसके निवारण हेतु कार्य कर रही है तथा हमें भी इसमें अपना थोड़ा सहयोग होगा.

20253